माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनशील विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा, मूल्यों तथा व्यक्तित्व आवश्यकताओं के सन्दर्भ में उनकी शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय, मेरठ
को
शिक्षा–शास्त्र विषय में
पी–एच०डी० उपाधि
हेतु प्रस्तुत
शोध की रूपरेखा

शोध निर्देशकः
डा० संजीव कुमार
आचार्य, कॉलिज ऑफ ऐजूकेशन,
आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय मेरठ।

शोधार्थिनीः
क्षमा रानी

माह एवं वर्ष : अक्टूबर 2022
–:शोध केन्द्रः–
कॉलिज ऑफ ऐजूकेशन
आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय, मेरठ

प्रस्तावना

मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा एक संजीवनी बूटी है शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति देश समाज और राष्ट्र प्रगति पथ पर अग्रसर होते है। तभी तो भृतहरि ने शिक्षा विहीन मनुष्य को सींग और पूँछ विहीन पशु की संज्ञा दी है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति के लिए केवल साधन और नीतियाँ ही पर्याप्त नहीं होती अपितु साधन और नीतियो के साथ–साथ समीचीन एवम् प्रायोगिक शिक्षा प्रणाली अपनाकर ही राष्ट्र की उन्नति सम्भव है। शिक्षा को सिर्फ किताबी ज्ञान विषय वस्तु के ज्ञान तक सीमित नहीं होना चाहिये–उसे मनुष्य के समाज मे रहने सामंजस्य, भ्रातृत्व, सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना चाहिये। वास्तव मे ंशिक्षा मनुष्य की आन्तरिक शक्तियो का विकास कर उसे बहुमुखी बनाती है। शिक्षा मनुष्य को जहाँ अधिकारों हेतु जागरुक करती है वही ंकर्तव्यं हेतु उत्तरदायी भी बनाती है। क्योंकि शिक्षा के माध्यम से ही अच्छे नागरिकों का निर्माण कर समाज व राष्ट्र के हित मे ं चिन्तन किया जा सकता है और संकल्प लेकर कार्य किया जा सकता है। किसी भी देश का भविष्य उसके भावी कर्णधारों (बालकों) पर निर्भर होता है क्योंकि आज का बालक ही आने वाले कल के देश का निर्माता होता है। बालक की भविष्य की समृद्धि एवं उन्नति अन्य सोपाना ें

के साथ– साथ उसके शैक्षिक स्तर पर भी निर्भर होती है। जिस प्रकार किसी भवन/इमारत की गुणवत्ता भवन की नींव, नींव की निर्माण सामग्री एवं भवन निर्माणकर्ता कलाकार मिस्त्री के सामंजस्य पर निर्भर करती है। ठीक उसी प्रकार राष्ट्र को समृद्ध एवं उन्नत करने के लिए शिक्षक, शिक्षार्थी एवं शिक्षा प्रणाली में समन्वय अति आवश्यक है, हम अपने देश के नागरिकों को एवं युवाओं की अच्छी शिक्षा देकर की प्रगति के लिए प्रोत्साहित कर सकते है अच्छी शिक्षा ही राष्ट्र को खुशहाल एवं विकसित बना सकती है।

ओटावे के अनुसार शिक्षा ही समाज की सांस्कृतिक धरोहर और उसके प्रतिबिम्ब रूप में परिलक्षित प्रतिमानों को युवाओं और कर्मठ व्यक्तियों को प्रदान करती है।

छात्र के व्यक्तित्व पर शिक्षा के दोनो ही साधनों औपचारिक तथा अनौपचारिक (विधालय और समुदाय) का प्रभाव पडता है। केवल एक ही साधन को प्रभाव मानना उचित नही है, क्योकि बालक के व्यक्तित्व का विकास केवल मात्र विधालय या केवल समुदाय से ही नही होता बल्कि दोनों माध्यम से ही होता है तथा विधालय व समुदाय के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। प्रत्येक छात्र के जीवन पर शिक्षा की अमित डाप निरन्तर बनी रहती है। चाहे वह शिक्षा परिवार से प्राप्त हुई हो या विधालय में

जाकर जागृत हुई हो। प्रत्येक विधार्थी का जीवन और उसके जीवन की कौशलता घर, परिवार, समाज, देश एवं आस–पास के वातावरण से ही प्राप्त होती है अतः विधार्थी के जीवन शैली एवं व्यक्तित्व विकास में समुदाय, समूह के साथ–साथ स्कूल कालिज का महत्वूर्ण योगदान है। क्योंकि शिक्षा की प्रक्रिया शून्य में घटित नही होती है यह समाज में सम्पन्न होती है। सामाजिक परिवेश से प्रभावित होती है। समय–समय पर बदलते शैक्षिक उददेश्य इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि शिक्षा –शास्त्र, समाजशास्त्र का घटक तत्व है और समाजशास्त्र, शिक्षा –शास्त्र का प्रभावक तत्व है क्योंकि समाज शास्त्र शिक्षा के सामाजिक प्रभावों, मानव जीवन में उसकी गतिशीलता इत्यादि का अध्ययन करता है और शिक्षा शास्त्र में शिक्षा के स्वरूप व उसका व्यक्तित्व विकास में योगदान होता है। जैसे कारकों या घटकों का अध्ययन किया जाता है ये दोनों अध्ययन परस्पर एक दूसरे के पूरक है क्योंकि एकांगी रूप में ये अपूर्ण ही सिद्ध होगें। परिवर्तनशील परिवेश शिक्षा के उददेश्य भी समाज की अनुकूल के अनुरूप है परिवर्तित होते रहते है अतः हम कह सकते है कि शिक्षा समाज का प्रतिरूप है और समाजशस्त्र शिक्षा को प्रभावित करने का ज्वलन्त प्रतिमान। जहाँ समाजिक परिवेश में मानव जीवन सामाजिक वातावरण के अनुसार ही अपनी जीवन शैली अपनाता है

और सामाजिक गतिविधियों का पालन करता हैं वही शिक्षा भी व्यक्ति के व्यक्तित्व को उभारने में उसको विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है अतः समाज एवं शिक्षा एक दूसरे पर आश्रित है।

दुर्खीम के अनुसार शिक्षा एक गत्यात्मक प्रक्रिया जोकि सामाजिक वातावरण परिस्थितियों के अनुसार ही नागरिको को प्रदान की जाती है जैसा देश वैसा भेष के अनुरूप ही जैसे समाज की आवश्यकता के अनुसार हमारी विचारधारी परिवर्तित होती रहती है। उसी प्रकार की शिक्षा ही प्रदान की जाती है। क्योंकि प्रत्येक समूह एवं समाज अपनी प्रतिमानों मूल्यों के अनुरूप ही शिक्षा के उददेश्यों को निर्धारित करता है समाज के विचारधारों के अनुसार ही शिक्षा का सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप दृष्टिविचार होता है अतः समाज एक शिक्षा विभिन्नचरों के रूप में एक दूसरे को प्रभावित करते है और करते रहेगें समाज से ही शिक्षा प्रभावित होती है और शिक्षा में ही समाज का विकास होता है। अतः यह कह सकते है कि शिक्षा के स्वरूप का यदि सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से अध्ययन किया जाये तो इसके विकास में समाज एक विशेष स्थान रखता है। इस प्रकार से इन कारको का सम्मिलित रूप

व्यक्ति की शिक्षा को प्रभावित करते है। एक ओर इन चरों से शिक्षा प्रभावित होती है तो दूसरी ओर शिक्षा ही इन चरों में परिवर्तन भी करती है।

उपलब्धि अभिप्रेरणा

शिक्षा एक जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है तथा प्रत्येक क्रिया के पीछे एक बल कार्य करता है जिसे हम प्रेरक बल कहते है। इस संदर्भ में अभिप्रेरणा एक बल है जो प्राणी को कोई निश्चित व्यवहार या निश्चित दिशा में चलने के लिये बाध्य करती है। अभिप्रेरणा अधिगम का आवश्यक अंग है इसके द्वारा किसी क्रिया को सीखने के लिए बालक में उत्साह उत्पन्न किया जा सकता है। जिस प्रकार घोड़े को पानी पिलाने के लिए तालाब तक ले जा सकते है लेकिन घाोडा पानी पिये यह जबरदस्ती नही कि जा सकती परंतु उसे पानी पीने के लिये विवश नहीं कर सकते।'' ठीक उसी प्रकार बालक को शिक्षा प्रदान करने हेतु विद्यालय मे प्रवेश तो दिलाया जा सकता है परन्तु अधिगम प्राप्त करने हेतु उसे केवल अभिप्रेरित कर सकते है। बलात् रूप से सिखाया नही ं जा सकता है

अतः अभिप्रेरणा की बहुत जरूरत है जिससे अधिगमार्थी सीखने में रूचि लेने लगे।

गुड के अनुसार– किसी भी कार्य को शुरू करने के लिए और करते रहने के लिए अभिप्रेरणा की आवश्यकता है

थामसन के अनुसार– प्रत्येक विद्यार्थी में रुचि उत्पन्न करना भी एक कला है जो रूचि छात्र में है ही नहीं या है तो इसको इसकी पहचान नही है इसलिए अभिप्रेरणा के द्वारा ही छात्र में रूचि उत्पन्न करना एक शिक्षक के लिए महत्वपूर्ण कार्य है।

आन्तरिक अभिप्रेरणा :– जिस कार्य को करने से बालक के अन्दर आनन्द की अनुभूति होती है सुख और संतोष की प्राप्ति होती है और अपने अन्तर मन से ही किसी कार्य को करने की इच्छा जागृत होती है। उसको आन्तरिक अभिप्रेरणा कहते है।

2.बाह्य अभिप्रेरणा :– प्रेरणा मे ंबालक किसी कार्य को अपनी स्वयं की इच्छा से न करके किसी दूसरे की इच्छा या बाह्य प्रभाव के कारण करता है। इस कार्य को करने से उसे किसी वांछनीय या निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति होती है

अभिप्रेरणा से संबंधित उपलब्धि अभिप्रेरणा नवीनविज्ञान का नाम है। जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को करता है तो वह उस कार्य में अधिकतम उपलब्धि प्राप्त करना चाहता है अर्थात कठिन कार्य करते हुए या चुनौतीपूर्ण कार्य करते हुए प्राप्त उपलब्धि ही' उपलब्धि अभिप्रेरणा' है। उपलब्धि अभिप्रेरणा की प्रकृति व्यक्तिगत होती है अर्थात यह एक व्यक्ति के व्यक्तिगत क्रियाकलापों पर आधारित होती है। किसी भी कार्य की उपलब्धि के लिए कार्य करने की अभिप्रेरणा ही उपलब्धि अभिप्रेरणा कहलाती है। उपलब्धि अभिप्रेरणा में व्यक्ति कठिन से कठिन कार्य कर सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि प्राप्त करने हेतु प्रयासरत रहता है।

मैकली लैड ने उपलब्धि अभिप्रेरणा को स्पष्ट करते हुए कहा है कि 'व्यक्ति जिसे चाहता है उसे प्राप्त करने के लिए अपनी समग्र शक्ति लगा देता है और परिणाम स्वरूप उसे जो उपलब्धि प्राप्त होती है वही उपलब्धि प्रेरणा है तथा व्यक्ति उसी से संतुष्टि प्राप्त करता है। इस प्रकार व्यक्ति अपने अभूतपूर्व क्रिया को करके उपलब्धि प्राप्त करता है।

मैक डेविड के अनुसार– "मनोवैज्ञानिक निर्देशन की उस प्रणाली को उपलब्धि अभिप्रेरणा कहते हैं, जिसे मानवीय क्रिया क्षमता, आक्रमण शीलता तथा प्रभुता के साथ संबंधित हो।" उपलब्धि अभिप्रेरणा एक ऐसी छिपी हुई विशेषता होती है जो प्रत्यक्ष प्रयासों से ही स्पष्ट होती है जब व्यक्ति अपने कार्य को व्यक्तिगत रूप से कुछ पाने का साधन समख होता है।

मूल्य

मूल्य व्यक्ति के मानवीय आचरण तथा व्यवहार का मापदण्ड होते हैं, इनका आधार मनुष्य के अनुभव, सामाजिक संस्कृतियाँ एवं सामाजिक परम्परायें होती हैं। मूल्य का शाब्दिक अर्थ है– उपयोगिता, वांछनीयता व महत्त्व। सामान्यतः किसी समाज में जिन आदर्शों को महत्त्व दिया जाता है और जिनसे उस समाज के व्यक्तियों का व्यवहार निर्देशित एवं नियन्त्रित होता है, उन्हें उस समाज के मूल्य कहते हैं, परन्तु भिन्न–भिन्न अनुशासनों में इन्हें भिन्न–भिन्न रूप में लिया गया है।

दर्शनशास्त्र में मनुष्य के जीवन के प्रति दृष्टिकोण को मूल्य की संज्ञा की जाती है। वेद मूलक दर्शनों के अनुसार मानव जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष है, और चार्वाक तथा आजीवक दर्शनों के

अनुसार भौतिक सुख–भोग मूल्य हैं, भारतीय दार्शनिकों की दृष्टि से मोक्ष और भोग दो भिन्न मूल्य हैं। धर्मशास्त्र में नैतिक नियमों को मूल्य माना जाता है। प्रत्येक धर्म के कुछ नैतिक नियम होते हैं और मनुष्य को उनका पालन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में करना होता है। क्योंकि इन नियामो के द्वारा ही मनुष्य अपने व्यवहार को नियन्त्रित एवं निर्देशित करने लगते हैं, तब ये उसके लिए मूल्य बन जाते हैं। मनौवैज्ञानिकों ने मूल्यों को मनुष्य की रूचियों, अभिवृत्तियों और पसन्दों के रूप में लिया है। फ्लिंक महोदय के अनुसार व्यक्ति जिन मापदण्डों को पसन्द करते हैं और महत्त्व देते हैं और जिनके आधार पर हम अपना व्यवहार निश्चित करते हैं, वे ही हमारे लिए मूल्य होते हैं। उनके शब्दों में– "मूल्य मानक रूपी मानदण्ड हैं जिनके आधार पर मनुष्य अपने सामने उपस्थित क्रिया विकल्पों में से चयन करने में प्रभावित होते हैं।" भारतीय समाजशास्त्री डॉ0 राधाकमल मुकर्जी के अनुसार व्यक्ति का प्रत्येक मूल्य उनके लक्ष्यों को दर्शाता है उनके शब्दों में– "मूल्य, समाजिक नियमों द्वारा स्वीकृत उन इच्छाओं और लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किए जा सकते हैं जिन्हें अनुबन्ध, अधिगम और समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा आभ्यान्तरीकृत किया जाता है, और जो आत्मनिष्ट अधिमान, मान तथा आकांक्षाओं का रूप धारण कर लेते हैं।" राधाकमल मुकर्जी की इस परिभाषा से मूल्यों की प्रकृति के बारे में चार तथ्य उजागर होते है– एक यह कि ये समाज द्वारा स्वीकृत होते हैं, दूसरा यह कि ये अनुबन्धन, अधिगम अथवा समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा सीखे जाते हैं, तीसरा यह कि ये मनुष्य द्वारा अपने अन्तःकरण में धारण किये जाते हैं और चौथा यह कि प्रत्येक व्यक्ति इन्हें अपनी

इच्छानुसार महत्त्व देता है। शिक्षाशास्त्रियों के अनुसार मूल्य का तात्पर्य बौद्धिक ज्ञान का विकास, जिज्ञासा, चिन्तन तथा बालक को आत्मनिर्भर बनाने से हैं।

अलपोर्ट के अनुसार– 'मूल्य व्यक्तित्व की प्रमुख रूचियो की ओर इंगित करते हैं।'

आज मूल्यपरक अवधारणा में परिवर्तन आ गया है। प्राचीन भारतीय मूल्य लुप्त होते नजर आ रहे हैं, जीवन मूल्यों का क्षरण हो रहा है फिर भी इस बात को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है, कि मानवीय मूल्यों का ह्रास हुआ है, नाश नहीं। अवश्य ही वे दब गये हैं, छिप गये हैं, परन्तु नष्ट नहीं हुए है। आज भी भारतीय संस्कृति जीवित है। वर्तमान समय में हमारे सामने बहुत ही विषम परिस्थितियाँ हैं, जैसे– भारतीय मूल्यों के प्रति अनभिज्ञता या भारतीय मूल्यों का ज्ञान तो है, परन्तु उनके प्रति आस्था का अभाव एवं मूल्यविहीन व्यवहार का प्रदर्शन या मूल्य के ज्ञान के बावजूद उन पर पिछड़ेपन का आभास व आत्म ग्लानि और आधुनिकता की पहल में मूल्य का लुप्त होना आदि ये विषम परिस्थतियाँ मूल्य अन्तर्द्वन्द्व को जागृत करती है। अतः आवश्यकता है, तो इस बात की, कि मूल्यों की शिक्षा द्वारा छात्रों को नैतिक भारतीय संस्कारों और नैतिक मूल्यों से सूसंस्कृत किया जाये।

मूल्य शिक्षा के स्तम्भ होते हैं। ये शिक्षा को आधार प्रदान करते हैं। मूल्य ही शिक्षा को नवीन कलेवर प्रदान करते है। शिक्षा का मूल्यों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। सन् 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी मूल्य चर्चा के सम्बन्ध में तीन बातें सामने आयी। इनके प्रमुख

1. सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास की प्रगति से पाठ्यक्रम में संशोधन किया जाये, जिससे वह इन मूल्यों का विकास करने का सशक्त साधन बन सकें।

2. शिक्षा द्वारा सार्वभौमिक व शाश्वत् मूल्यों का विकास किया जाये, जिससे वह धार्मिक कट्टरता, अहिंसा, अन्धविश्वासों का दमन कर सकें।

3. मूल्य शिक्षा हेतु ऐसा पाठ्यक्रम बनाया जाये, जो मूल्यों का सकारात्मक विकास करें। इसमें राष्ट्रीय विरासत व राष्ट्रीय लक्ष्यों पर बल दिया जाये।

4. व्यक्तित्व आवश्यकताएँ

व्यक्तित्व शब्द बहुत व्यापक है और व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग हम विभिन्न अर्थों में किया करते हैं। 'व्यक्तित्व' अंग्रेजी के लेटिन शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। पर्सनेल्टी शब्द लेटिन के परसोना शब्द से विकसित है। जिसका अर्थ है नकली चेहरा। जबकि साधारण भाषा में व्यक्तित्व को बाह्य आवरण माना जाता है ओर दर्शन शास्त्र में उसे आंतरिक तत्व 'जीव' माना जाता है, मनोविज्ञान में व्यक्तित्व न तो बाह्य आवरण ही है और न आंतरिक तत्व, बल्कि दोनों ही है। व्यक्तित्व कोई स्थित अवस्था न होकर एक गतिशील समष्टि है, जो परिवेश के प्रभाव से बराबर बदलती रहती है। यह व्यक्तित्व व्यक्ति के आचार–विचार, व्यवहार, क्रियाओं, गतिविधियों सभी बातों में झलकता है।

आलपोर्ट के शब्दो में – व्यक्तित्व व्यक्ति मे उन मनोदेहिक व्यवस्थाओं का संगठन है जो वातावरण के साथ उसका अपूर्व समायोजन स्थापित करता है।

ड्रेवर के शब्दो में – व्यक्तित्व व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों का समन्वित और गत्यात्मक रूप है जो समाजिक जीवन में आदान –प्रदान की व्यावहारिक प्रक्रिया के रूप में प्रकट होता है।‘‘

इस प्रकार व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्धारण उसकी मनोदेहिक एवं वातावरणीय आवश्यकताओं की पूर्ति के आधार पर निर्धारित होता है। अतः व्यक्ति के व्यक्तित्त्व को निर्धारित करने वाली ये आवश्यकताएं ही व्यक्तित्व आवश्यकताएं कहलाती है। यदि इन आवश्यकताओं की पूर्ति समय पर होती रहती है तो क्रियान्क्ति के क्रियाकलाप एवं उपलब्धियाँ सामान्य रूप से प्रभावित नही होती है। परन्तु यदि इन आवश्यकताओ की पूर्ति न हो अथवा समय पर न हो तब व्यक्ति के क्रियाकलाप एवं अन्य उपलब्धियाँ विचलित हो जाते है। उदाहरण के लिए– यदि किसी व्यक्ति को भूख लगने पर भोजन की प्राप्ति न हो अथवा विलम्ब से हो तब वह व्यक्ति किसी अन्य कार्य मे ंमन नही लग सकता उसका ध्यान तो केवल अपनी क्षुधा को कैसे शांत किया जाये ? उसी और रहता है। अतः व्यक्तित्व आवश्यकताएं व्यक्ति के कार्यो तथा अन्य पक्षों को किसी न किसी प्रकार प्रभावित करती है।

शैक्षिक –उपलब्धि से तात्पर्य है, किसी शिक्षण –संस्थान द्वारा सम्पादित परीक्षा में उपलब्धि स्तर, प्राप्तांक या परीक्षा श्रेणी, शिक्षार्थी की सफलता व असफलता तथा उसकी मात्रा अर्थात शिक्षण –संस्थान के अन्तर्गत शिक्षार्थी के द्वारा एक अवधि विशेष में किये गये अध्ययन व परिश्रम का वस्तुगत परीक्षा परिणाम उपार्जन।

5. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

अली, महमूद 1998 ने अपने शोध अध्ययन उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक चुनाव के निर्धारकों, व्यक्तिगत मूल्यों, जीवन आकांक्षाओं, शैक्षिक उपलब्धि और सामाजिक आर्थिक स्तर के अध्ययन में पाया कि शैक्षिक उपलब्धि सामाजिक आर्थिक स्तर, ज्ञान मूल्य और व्यावसायिक आकांक्षाओं से सार्थक और धनात्मक रूप से तथा शारीरिक मूल्य से नकारात्मक रूप से सह–सम्बन्धित थी। उन्होंने कला समूह और विज्ञान समूह में पाया कि शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक आर्थिक स्तर से सार्थक सह सम्बन्ध रखती थी जबकि शैक्षिक उपलब्धि का वाणिज्य समूह में इन सभी उपरोक्त चरों में कोई सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

वर्मा, बी0 पी0 और मूर्ति, राम (1998) ने अपने शोध अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये –

1 पुरूष विद्यार्थियों के समूह में सामाजिक मूल्यों के मामलों में अवरोध का बढ़ना मुख्य प्रभाव पाया गया। अधिक वंचित बालक विद्यार्थियों ने कम वंचित बालक विद्यार्थियों की अपेक्षा सामाजिक मूल्यों पर अधिक अंक प्राप्त किये जबकि महिला विद्यार्थियों के मूल्यों के अवरोध वृद्धि के मुख्य प्रभाव में सार्थकता नहीं थी।

2 महिला विद्यार्थियों के समूह में मूल्य अवरोध बढ़ने पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया, जबकि धार्मिक मूल्यों पर बुद्धिमता का प्रभाव पाया गया। कम बुद्धिमान महिला विद्यार्थियों में अधिक बुद्धिमान महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक धार्मिक अनुभूति की प्रवृत्ति पायी गई।

सिंह, प्रभा और सोनी, रश्मि (1999) ने आक्रमणकारिता और मूल्य आदर्शो का लिंग और कालिज अनुदेशन माध्यम के अन्तरो के संदर्भ में विद्यार्थियों के अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये –

1 अनुदेशनात्मक माध्यम और लिंगों के आधार पर समूहों में पृथकता निश्चित क्रम में कुछ विचलन के साथ मूल्य रेखाचित्र पर एक दम समानता दिखाती थी।

2 मूल्यों जैसे बुद्धिमता, आत्म सम्मान, आनन्ददायक जीवन, परिवार सुरक्षा, खुशी, सच्ची मित्रता, और राष्ट्रीय सुरक्षा के सम्बन्ध में कुछ अन्तर पाया गया। अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के द्वारा आत्म सम्मान को बहुत अधिक मूल्य वरीयता दी गई जबकि हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों ने इस मूल्य को कुछ कम वरीयता दी। इस मूल्य के सम्बन्ध में लिंगानुसार समूह पृथकता अधिक विचलन नहीं दिखाती थी।

3 मूल्यों, बुद्धिमता और आनन्ददायक जीवन के सम्बन्ध में अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों एवं बालक विद्यार्थियों तथा ठीक उसी तरह की बालिका विद्यार्थियों ने बुद्धिमता को प्राथमिकता दी जबकि हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों ने अधिक आदर्शपूर्ण आस्था के साथ आनन्ददायक जीवन को वरीयता दी।

4 केवल हिन्दी माध्यम समूह के विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय सुरक्षा को प्राथमिकता दी जबकि इसे लड़कियों ने लड़कों की अपेक्षा कम मूल्य दिया।

5 आक्रमकता का स्तर और मूल्यों के लिए वरीयता एक दूसरे से कुछ मामलों में सम्बन्धित थी।

मालती (2007), वाराणसी ने अपने शोधाध्ययन में पाया कि माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश के छात्र, सी0 बी0 एस0 ई0 तथा आई0 सी0 एस0 ई0 के छात्रों की अपेक्षा उच्च मूल्य रखते हैं परन्तु शैक्षिक उपलब्धि में निम्न होते हैं।

शेखर, चन्द्र और चौधरी, प्रिया (2017). इन्फलूएन्स ऑफ अचीवमेन्ट मोटिवेशन ऑन एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स। वर्तमान अध्ययन लिंग, अकादमिक धाराओं और स्थान के आधार पर अकादमिक उपलब्धि के अन्तरों को खोजने के उद्देश्य से किया गया था। अध्ययन हेतु 100 छात्रों का चयन किया गया था।

इसके परिणाम बताते हैं कि विज्ञान और कला वर्ग के विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा के बीच तथा ग्रामीण एवं शहरी छात्रों और पुरूष एवं महिला छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा के बीच महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया जो यह संकेत करता है कि छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा में लिंग और अकादमिक प्रमुख महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शर्मा सपना, राधारानी सक्सेना एवं मीनाक्षी (2019), वनस्थली विद्यापीठ टाँक, राजस्थान ने अपने शोधाध्ययन "उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन" में निष्कर्ष निकल पाया कि कला व विज्ञान के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सहसम्बन्ध नही पाया जाता है।

6. शोध का औचित्य

टैगोर तथा गांधी जी ने छात्रों के व्यक्तित्व के विकास के लिए शिक्षण संस्थाओं में रचनात्मक वातावरण के निर्माण पर बल दिया है। स्कूल वातावरण का बालकें पर बहुत प्रभाव पडता है। स्कूल कहाँ स्थित है? उसकी कार्य पद्धति, परम्परायें व आदर्श क्या हैं? अध्यापक, छात्र एवं माता–पिता कैसे हैं? दूसरे शब्दों में

स्कूल की प्रकृति क्या है? जहाँ उच्च आदर्श स्कूल को संचालित करते हैं, जहाँ अध्यापक निष्ठापूर्वक अपना कर्त्तव्य निभाते हैं, जहाँ छात्र–छात्राओं, माता–पिता, अध्यापक व समुदाय में आपसी सम्मान, स्नेह और प्यार होता है, वहाँ छात्रों के व्यक्तित्व, बुद्धि व आदर्शों का स्वतः ही पर्याप्त विकास होगा, अर्थात् छात्रों का वहाँ ही सर्वांगीण विकास सम्भव है। अतः शिक्षण संस्थाओं को वर्तमान सन्दर्भ को ध्यान में रखकर छात्रों का सर्वांगीण विकास करना अपना लक्ष्य बनाना चाहिए।

विभिन्न तकनीकी संसाधनों के आर्विभाव व उनके प्रभाव से कारण आधुनिक विद्यार्थी को शिक्षा प्राप्त करने के उन्नत अवसर प्राप्त हुए हैं परन्तु प्रतियोगितात्मक तथा तुलनात्मक झंग से उनकी उपलब्धियों का आकलन करना एक गम्भीर समस्या बन गई है। जिससे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भी प्रभावित हुई है। क्योंकि माता–पिता, अभिभावकों, शिक्षकों तथा सहपाठियों की अपेक्षाओं, उनका आत्मविश्वास विद्यार्थियों को उच्च शेक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है किन्तु इस स्तर को प्राप्त करने में अन्य कारक जैसे उनकी व्यक्तित्व आवश्यकताएँ, मूल्य आदि भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परन्तु परिणाम अपेक्षानुरूप न आने पर एक निराशा का वातावरण बन जाता है। अतः शोधार्थिनी ने इस गम्भीर समस्या को शिक्षा तथा विद्यार्थी की चुनौती मानते हुए प्रस्तुत शोध को चयनित किया गया। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर इन कारकों के पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कर उससे प्राप्त परिणामों एवं निष्कर्षों को नीति–निर्धारकों, विद्यालय प्रशासकों, शिक्षकों, अभिभावकों तथा अन्य हितधारकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा सके तथा उनके

आधार पर दिये गये सुझावों को अपनाकर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अपेक्षानुरूप सुधार लाया जा सके।

7. शोध समस्या कथन

माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा, मूल्यों तथा व्यक्तित्व आवश्यकताओं के सन्दर्भ में उनकी शैक्षिक उपलब्धि का पर्यवेक्षण करना ।

8. शोध के उद्देश्य:

शोध को सही दिशा प्रदान करने तथा शोध के परिणामों व निष्कर्षों की विश्वसनीय एवं सफलतम प्राप्ति हेतु शोधार्थिनी द्वारा शोध के अग्रलिखित उददेश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का उच्च एवं निम्न स्तर के आाधार पर जांच करना।
2. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का उच्च एवं निम्न स्तर के आधार पर पर्यवेक्षण करना।
3. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा के अनेक पक्षों का पर्यवेक्षण करना।
4. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील छात्रों के मूल्यों के विभिन्न स्तरों का पर्यवेक्षण करना।

5. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील छात्रों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं के विभिन्न स्तरों का अध्ययन करना।

6. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मूल्यों के विभिन्न स्तरों के प्रभाव का अध्ययन करना।

7. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि उनकी व्यक्तित्व आवश्यकताओं के विभिन्न स्तरों के प्रभाव का अध्ययन करना।

8. माध्यमिक शिक्षालयों मे ंअध्ययनशील छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा, मूल्यों एवं व्यक्तित्व आवश्यकताओं के विभिन्न स्तरों के प्रभाव से सम्बन्धित प्राप्त परिणामो ंएवं निष्कर्षो का पर्यवेक्षण करना।

9. माध्यमिक शिक्षालयों मे ंअध्ययनशील छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी प्रभाव से सम्बन्धित प्राप्त परिणामों एवं निष्कर्षो के आधार पर सुझावों का प्रतिपादन करना।

9. शोध परिकल्पनाए

शोध के उददेश्यों की सफलतम प्राप्ति हेतु शोधार्थिनी द्वारा निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं को निर्मित किया गया है–

1. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही होगा।

2. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील छात्र / छात्राएं वर्ग के विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही होगा।

3. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील विज्ञान एवं मानविकी वर्ग के विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही होगा।

4. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील विधार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नही होगा।

5. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील विधार्थी वर्ग के विधार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नही होगा।

6. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील विज्ञान एवं मानविकी वर्ग के विधाथिर्यो की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नही होगा।

7. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील विधाथिर्यों मूल्यों में सार्थक अन्तर नही होगा।

8. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील विधाथिर्यो के मूल्यो में सार्थक अन्तर नही होगा।

9. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील विज्ञान वर्ग एवं मानविकी वर्ग के विधार्थियों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नही होगा।

10. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील विधार्थियों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं में सार्थक अन्तर नही होगा।

11. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील बालक एवं बालिका वर्ग के विद्यार्थियों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

12. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील विज्ञान एवं मानविकी वर्ग के विद्यार्थियों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

13.माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा के विभिन्न स्तरों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

14. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील विद्यार्थियों शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मूल्यों के विभिन्न स्तरों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

15. माध्यमिक शिक्षालयों में अध्ययनशील विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी व्यक्तित्व आवश्यकताओं के विभिन्न स्तरों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

उपरोक्त परिकल्पना क्रम संख्या 13, 14 व 15 के आलोक में उपलब्धि प्रेरणा, मूल्य तथा व्यक्तित्व आवश्यकतओं के उच्च एवं निम्न स्तरों पर निम्नलिखित वर्गों के आधार पर शून्य उपपरिकल्पनाओं का निर्माण कर उनका परीक्षण भी शोधार्थिनी द्वारा किया जायेगा–

(क) बालक वर्ग
(ख) बालिका वर्ग
(ग) विज्ञान वर्ग
(घ) मानविकी वर्ग

10. शोध के चर

स्वतंत्र चरः उपलब्धि अभिप्रेरणा, मूल्य तथा व्यक्तित्व आवश्यकताएँ।

आश्रित चरः शैक्षिक उपलब्धि।

11. शोध प्रारूप एवं शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विभिन्न कारकों के प्रभाव के अध्ययन से सम्बन्धित है अतः शोध कार्य की प्रकृति वर्णनात्मक अनुसंधान की होगी। जिसे सर्वेक्षण प्रविधि के आधार पर सम्पन्न किया जायेगा।

12. शोध जनसंख्या एवं न्यादर्शः

प्रस्तुत शोध बदलते शैक्षिक परिदृश्य यथा– आनलाईन शिक्षा प्रणाली, नई शिक्षा नीति का अनुपालन, तथा परीक्षा पद्धति एवं विद्यार्थियों की उपलब्धियों के आकलन एवं निर्धारण की नवीन प्रणालियों के परिप्रेक्ष्य में एक आवश्यक एवं महत्पूर्ण स्थान रखता है। अतः इसकी महत्वता को ध्यान में रखते हुए शोधार्थिनी ने मेरठ मण्डल के तीन जनपदों यथा– मेरठ, हापुड़ एवं गाजियाबाद में किसी भी वैधानिक (राज्य अथवा केन्द्र सरकार स्तर पर) शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता एवं सम्बद्धता प्राप्त संचालित समस्त माध्यमिक विद्यालयों को शोध की जनसंख्या माना गया है।

शोध न्यादर्श हेतु चयनित प्रत्येक जनपद से 5–5 विद्यालयों कुल 15 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया जायेगा। प्रत्येक विद्यालय से कक्षा 9, 10 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों से कुल 64 विद्यार्थियों

का चयन (2×2×2×2) कारक प्रारचना के आधार पर यादृच्छिक विधि से किया जायेगा। इस प्रकार कुल 480 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया जायेगा। जिसका प्रारूप निम्न प्रकार से होगा–

	कक्षा–9		कक्षा–10	
	मानविकी वर्ग	विज्ञान वर्ग	मानविकी वर्ग	विज्ञान वर्ग
बालिका विधार्थी	60	60	60	60
बालक विधार्थी	60	60	60	60
योग	120	120	120	120

13. शोध उपकरण

शोध के प्रमाणिक एवं विश्वसनीय व वैध परिणामों की प्राप्ति हेतु तीन मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग शोधार्थिनी द्वारा किया जायेगा जबकि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु शोधार्थिनी एवं शोध पर्यवेक्षक द्वारा निर्मित शोध परीक्षण उपकरण का प्रयोग किया जायेगा। तीनों मानकीकृत परीक्षणों का विवरण इस प्रकार है–

1.विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के मापन हेतु डा० टी० आर० शर्मा द्वारा निर्मित एकेडमिक अचीवमेंट मोटिवेशन टेस्ट अथवा डॉ. बीना शाह (1986) द्वारा निर्मित उपलब्धि अभिप्रेरणा मापनी का प्रयोग किया जायेगा।

2. मूल्य मापन हेतु जी. पी. शेरी एवं आर. पी. वर्मा द्वारा निर्मित मूल्य परीक्षण।

3. व्यक्तित्व आवश्यकताओं के मापन हेतु डा0 मीनाक्षी भटनागर द्वारा निर्मित व्यक्तित्व परीक्षण संकेतिका।

14. शोध सांख्यिकी प्रविधियाँ

प्रस्तुत शोध में मनोवैज्ञानिक चरों तथा मानकीकृत परीक्षणों पर प्राप्त आंकड़ों से विश्लेषण के आधार पर प्रमाणिक निष्कर्ष प्राप्त करने हेतु शोधार्थिनी द्वारा उपयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियों यथा– समान्तर माध्य, प्रमाणिक विचलन, टी–परीक्षण, अथवा एफ.–परीक्षण अथवा आवश्यकतानुरूप अन्य उचित सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा।

15. शोध का परिसीमन

सीमित संसाधनों की उपलब्धता तथा समय की बाध्यता को ध्यान में रखते हुए शोधार्थिनी द्वारा प्रस्तुत शोध को निम्नलिखित प्रकार से सीमित किया जायेगा–

1. शोध कार्य को मेरठ मण्डल के मात्र तीन जनपदों तक ही सीमित रखा जायेगा।

2. माध्यमिक स्तर पर केवल कक्षा 9 से 10 तक के ही मात्र 480 विद्यार्थियों को ही न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया जायेगा।

3. आंकड़ा संगग्रहण हेतु केवल प्रमापीकृत शोध उपकरणों का ही प्रयोग किया जायेगा।

4. सीमित सम्बनिधत साहित्य का ही अध्ययन प्रस्तुत शोध कार्य हेतु किया जायेगा।

16. सन्दर्भ सूची

1. अकरम, 'माध्यमिक विद्यालय स्तर पर शिक्षक प्रभावशीलता और छात्र उपलब्धि के छात्रों के बीच संबंध बुलेटिन अफ एजुकेशन एंड रिसर्च अगस्त 2019, वाल्यूम 41,नं.–2, 93–108।

1. आहलुवालिया, आई, उपलब्धि अभिप्रेरणा पर लिंग, आयु, जन्मक्रम, आर्थिक स्तर, पालकों की शिक्षा आदि तत्वों के प्रभाव का अध्ययन, फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, 1985; 1–48.

2. कादर, मोहमद अकबल (2017). अचीवमट मोटवेशन अफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेंटस इन रिलेशन टू देयर जेंडर एंड मीडयम अफ इंस्ट्रक्शनः एन एम्पिरिकल स्ट्डी अफ हैदराबाद डिस्ट्रिक्ट. इंटरनेशनल जर्नल अफ अकादिमक रिसर्च एंड डेवलपमेण्ट. सितबर, 2(5), 813–816.

3. कौल लोकेश, शिक्षा अनुसंधान की कार्यप्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली, 2010।

4. गैरेट हेनर ई. एण्ड बुडवर्थ, आर. एस. (1971). स्टेटिस्टिक इन साइकोलजी एड एजकुेशन. बोम्बेः वकील्स, फेफर एड साइमन प्राइवेट लिमिटेड.

5. जोशी और परिजा पी0, ''पर्सनालिटी कोरिलेट्स ऑफ टीचिंग कम्पटीटेन्सी,'' भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका अंक–2, जनवरी–जून 2000 पृ057–62 वाल्यूम–19

6. दुबे, प्रमिला एवं गर्ग, निकिता, अध्यापक के व्यक्तित्व का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं विषय रुचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन,सांस्कृतिक और सामाजिक अनुसंधान, 2020,(1), 14–16

7. देसवाल, वाई. एवं रानी, आर., अभिभावक युक्त किशोरों एवं अनाथ किशोरों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर अध्ययन, जर्नल एजुकेशन एण्ड साइकोलॉजीकल रिसर्च, 2012 2(1), 69–73.

9. पाण्डेय, रामशकल, 'शिक्षा की ऐतिहासिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2005।

10.बब्बर.एस.उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के नियंत्रण अवस्थान का उनकी उपलब्धि अभिप्रेरण पर प्रभाव का अध्ययन, शोध संप्रेषण, जुलाई–सितम्बर 2014,अंक 9, 133–139.

11 भटनागर सुरेश, 'कोठारी कमीशन, एक विवेचनात्मक अध्ययन', लॉयल बुक डिपो, मेरठ, 1996।

12 भार्गव, एच.पी., मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, भार्गव प्रेस, आगरा, 2008।

13 मदान, पूनम, भारत में शिक्षा व्यवस्था', अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, 2002।

14 माथुर, एस0एस0, 'शिक्षा सिद्धान्त' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2002।

15 मुखर्जी, हिमांशु भूषण, 'एजूकेशन फॉर फुलनैस' एशिया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2014।

16. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986, शिक्षा विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1887।

17. सुथा, एम. एंड शर्लिन, पी. (2017), क्लासरूम क्लाइमेट एंड अचीवमेंट मोटिवेशन अफ हायर सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेंटस इन कन्याकुमारी डिस्ट्रिक्ट, इंटरनेशनल जर्नल अफ रिसर्च– ग्रंथालयाः 5(3)एसई, 23–32. https://doi-org/10.5281/zenodo545961.

18. शर्मा, आर0 ए0, 'शिक्षा अनुसन्धान' लॉयल बुक डिपो, मेरठ, 2002।

19. शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार, माध्यमिक शिक्षा आयोग, 1952–53, शिक्षा मन्त्रालय, नई दिल्ली, 1962।

20. https://www.allstudyjournal.com/article/609/3-3-49-763.pdf

21. https://www.worldwidejournals.com/global-journal-for-research-analysis-GJRA/ recent_issues_pdf/2018/January/January_2018_1516276046__128.pdf

मनौवैज्ञानिकों ने मूल्यों को मनुष्य की रूचियों, अभिवृत्तियों और पसन्दो के रूप में लिया है। फ्लिंक महोदय के अनुसार हम जिन मापदण्डों को पसन्द करते हैं और महत्त्व देते हैं और जिनके आधार पर हम अपना व्यवहार निश्चित करते हैं, वे ही हमारे लिए मूल्य होते हैं। उनके शब्दों में– ”मूल्य मानक रूपी मानदण्ड हैं जिनके आधार पर मनुष्य अपने सामने उपस्थित क्रिया विकल्पों मे से चयन करने मे ंप्रभावित होते हैं।”

- **अलपोर्ट के अनुसार–** ‘मूल्य व्यक्तित्व की प्रमुख रूचियो की और इंगित करते हैं।’
- मूल्य शिक्षा के स्तम्भ होते हैं। ये शिक्षा को आधार प्रदान करते हैं। मूल्यो द्वारा शिक्षा के स्वरूप का निर्धारण होता है। शिक्षा का मूल्यो के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। सन् 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी मूल्य चर्चा के सम्बन्ध में तीन बातें सामने आयी। इनके प्रमुख सुझाव निम्नवत है –
- 1. सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास की दृष्टि से पाठ्यक्रम में संशोधन किया जाये, जिससे वह इन मूल्यों का विकास करने का सशक्त साधन बन सकें।

  2. शिक्षा द्वारा सार्वभौमिक व शाश्वत् मूल्यों का विकास किया जाये, जिससे वह धार्मिक कट्टरता, अहिंसा, अन्धविश्वासों का दमन कर सकें।

  3. मूल्य शिक्षा हेतु ऐसा पाठ्यक्रम बनाया जाये, जो मूल्यो ंका सकारात्मक विकास करें। इसमे ंराष्ट्रीय विरासत व राष्ट्रीय लक्ष्यों पर बल दिया जायें।

व्यक्तित्व आवश्यकताएँ

- व्यक्तित्व शब्द बहुत व्यापक है और व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग हम विभिन्न अर्थों में किया करते हैं। 'व्यक्तित्व' शब्द पर्सनैल्टी का हिन्दी रूपान्तरण है। पर्सनेल्टी शब्द लेटिन के परसोना शब्द से विकसित है। जिसका अर्थ है नकली चेहरा। जबकि साधारण भाषा में व्यक्तित्व को बाह्य आवरण माना जाता है ओर दर्शन शास्त्र मे ंउसे आंतरिक तत्व 'जीव' माना जाता है, मनोविज्ञान में व्यक्तित्व न तो बाह्य आवरण ही है और न आंतरिक तत्व, बल्कि दोनो ही है। व्यक्तित्व कोई स्थित अवस्था न होकर एक गतिशील समष्टि है, जो परिवेश के प्रभाव से बराबर बदलती रहती है। यह व्यक्तित्व व्यक्ति के आचार–विचार, व्यवहार, क्रियाओ गतिविधियों सभी बातो ंमें झलकता है। व्यक्तित्व व्यक्ति का परिवेश से अनुकूलन करने का ढंग है। जो व्यक्ति परिवेश से अनुकूलन करने का ढंग है। जो व्यक्ति परिवेश से अनुकूलन के लिये जिस प्रकार से व्यवहार करता है, वही उसका व्यक्तित्व है। इस व्यवहार में संकलन की आवश्यकता पड़ती है। यह संकलन भिन्न–भिन्न व्यक्तित्व मे अलग–अलग मात्रा मे पाया जाता है, परन्तु सामान्य रूप से सभी स्वस्थ व्यक्तियों में किसी न किसी प्रकार का संकलन होता अवश्य है। यह विशेष संकलन, संकलन का विशिष्ट रूप ही उनका व्यक्तित्व है। यही एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से अलग रखता है।

- आलपोर्ट के शब्दों मे :– ”व्यक्तित्व व्यक्ति में उन मनोदैहिक व्यवस्थाओं का संगठन हैं जो वातावरण के साथ उसका अपूर्व समायोजन स्थापित करती है।”
- ड्रेवर के शब्दों मे :– ”व्यक्तित्व व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों का समन्वित और गत्यात्मक रूप है जो सामाजिक जीवन में आदान–प्रदान की व्यावहारिक प्रक्रिया के रूप में प्रकट होता है।”

शैक्षिक–उपलब्धि से तात्पर्य है, किसी शिक्षण–संस्थान द्वारा सम्पादित परीक्षा में उपलब्धि स्तर, प्राप्तांक या परीक्षा श्रेणी, शिक्षार्थी की सफलता व असफलता तथा उसकी मात्रा अर्थात शिक्षण–संस्थान के अन्तर्गत शिक्षार्थी के द्वारा एक अवधि विशेष मे किये गये अध्ययन व परिश्रम का वस्तुगत परीक्षा परिणाम उपार्जन।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

- अली, महमूद 1998 ने अपने शोध अध्ययन उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक चुनाव के निर्धारको व्यक्तिगत मूल्यो जीवन आकांक्षाओं, शैक्षिक उपलब्धि और सामाजिक आर्थिक स्तर के अध्ययन मे पाया कि शैक्षिक उपलब्धि सामाजिक आर्थिक स्तर, ज्ञान मूल्य और व्यावसायिक आकांक्षाओ से सार्थक और धनात्मक रूप से तथा शारीरिक मूल्य से नकारात्मक रूप से सह–सम्बन्धित थी। उन्होने कला समूह और विज्ञान समूह में पाया कि शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक आर्थिक स्तर सें सार्थक सह सम्बन्ध रखती थी जबकि शैक्षिक उपलब्धि का वाणिज्य समूह में इन सभी उपरोक्त चरों मे कोई सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

- वर्मा, बी0 पी0 और मूर्ति, राम (1998) ने अपने शोध अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये –
- 1 पुरूष विद्यार्थियो के समूह मे सामाजिक मूल्यों के मामलो में अवरोध का बढना मुख्य प्रभाव पाया गया। अधिक वंचित बालक विद्यार्थियों ने कम वंचित बालक विद्यार्थियों की अपेक्षा सामाजिक मूल्यों पर अधिक अंक प्राप्त किये जबकि महिला विद्यार्थियों के मूल्यो के अवरोध वृद्धि के मुख्य प्रभाव में सार्थकता नही थी।
- महिला विद्यार्थियो के समूह मे मूल्य अवरोध बढने पर कोई प्रभाव नही पाया गया,जबकि धार्मिक मूल्यों पर बुद्धिमता का प्रभाव पाया गया। कम बुद्धिमान महिला विधार्थियों में अधिक बुद्धिमान महिला विधार्थियों की अपेक्षा अधिक धार्मिक अनुभूति की प्रवृत्ति पायी गयी।

शोध का औचित्य

- टैगोर तथा गांधी जी ने छात्रो के व्यक्तित्व के विकास के लिए शिक्षण संस्थाओं में रचनात्मक वातावरण के निर्माण पर बल दिया है। स्कूल वातावरण का बालकें पर बहुत प्रभाव पडता है। स्कूल कहाँ स्थित है? उसकी कार्य पद्धति, परम्पराये ंव आदर्श क्या हैं? अध्यापक, छात्र एवं माता–पिता कैसे हैं? दूसरे शब्दों में स्कूल की प्रकृति क्या है? जहाँ उच्च आदर्श स्कूल को संचालित करते हैं, जहाँ अध्यापक निष्ठापूर्वक अपना कर्त्तव्य निभाते हैं जहाँ छात्र–छात्राओ, माता–पिता, अध्यापक व समुदाय में आपसी सम्मान, स्नेह और प्यार होता है, वहाँ छात्रो के व्यक्तित्व, बुद्धि व आदर्शों का स्वतः ही पर्याप्त विकास होगा, अर्थात् छात्रो का वहाँ ही सर्वांगीण विकास सम्भव है। अतः शिक्षण संस्थाओ का वर्तमान सन्दर्भ को ध्यान में रखकर छात्रों का सर्वांगीण विकास करना अपना लक्ष्य बनाना चाहिए।

शोध समस्या कथन

- माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों तथा व्यक्तित्व आवश्यकताओं के विभिन्न का अध्ययन की उपलब्धि अभिप्रेरणा, मूल्यो स्तरो ंपर उनकी शैक्षिक उपलब्धि
- **शोध के उद्देश्य:**

  शोध को सही दिशा प्रदान करने तथा शोध के परिणामों व निष्कर्षों की विश्वसनीय एवं सफलतम प्राप्ति हेतु शोधार्थिनी द्वारा शोध के अग्रलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

  1. माध्यमिक विद्यालयो मे अध्ययनरत् विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि का उच्च एवं निम्न स्तर के आधार पर अध्ययन करना

- 2. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा के विभिन्न स्तरो का अध्ययन करना। • 3. माध्यमिक विद्यालयो ंमें अध्ययनरत् विद्यार्थियो ंके मूल्यो के विभिन्न स्तरो ंका अध्ययन करना।
- 4. माध्यमिक विद्यालयो में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं के विभिन्न स्तरों का अध्ययन करना। • 5. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी उपलब्धि
  अभिप्रेरणा के विभिन्न स्तरों के प्रभाव का अध्ययन करना।
- 6. माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मूल्यो ंके विभिन्न स्तरों के प्रभाव का अध्ययन करना।
- 7. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उनकी व्यक्तित्व आवश्यकताओं के विभिन्न स्तरो ं के प्रभाव का अध्ययन करना।
- 8. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा, मूल्यों एवं व्यक्तित्व आवश्यकताओं के विभिन्न स्तरो ंके प्रभाव से` सम्बन्धित प्राप्त परिणामों एवं निष्कर्षों का अध्ययन करना।
- 9. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा, मूल्यों एवं व्यक्तित्व आवश्यकताओं के विभिन्न स्तरो ंके प्रभाव से सम्बन्धित प्राप्त परिणामों एवं निष्कर्षों के आधार पर सुझावों का प्रतिपादन करना

शोध परिकल्पनाएँ

- शोध के उद्द ेश्या ें की सफलतम प्राप्ति हेतु शोधार्थिनी द्वारा निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–
- 1.माध्यमिक विद्यालयों मे ंअध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
- 2.माध्यमिक विद्यालयो ंमें अध्ययनरत् बालक एवं बालिका वर्ग के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
- 3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग एवं मानविकी वर्ग के विद्यार्थिया ें की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
- 4.माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

- 5. माध्यमिक विद्यालयो ंमें अध्ययनरत् बालक एवं बालिका वर्ग के विद्यार्थियो की उपलब्धि अभिप्रेरणा मे ंसार्थक अन्तर नहीं होगा।
- 6. माध्यमिक विद्यालया में अध्ययनरत् विज्ञान एवं मानविकी वर्ग के विद्यार्थियो की उपलब्धि अभिप्रेरणा मे सार्थक अन्तर नहीं होगा।
- 7. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों मूल्यों में सार्थक अन्तर नही ं होगा।
- 8. माध्यमिक विद्यालयो ं में अध्ययनरत् बालक एवं बालिका वर्ग के विद्यार्थियों के मूल्यो में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
- 9. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग एवं मानविकी वर्ग के विद्यार्थियों के मूल्यों मे सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

- 10.माध्यमिक विद्यालयो मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
- 11. माध्यमिक विद्यालयो ं में अध्ययनरत् बालक एवं बालिका वर्ग के विद्यार्थिया ें की व्यक्तित्व आवश्यकताओं में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
- 12. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान एवं मानविकी वर्ग के विद्यार्थियों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
- 13. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियो ंकी शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा के विभिन्न स्तरों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।
- 14. माध्यमिक विद्यालयों मे ंअध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मूल्यो ंके विभिन्न स्तरों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।
- 15. माध्यमिक विद्यालयों मे ंअध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी व्यक्तित्व आवश्यकताओं के विभिन्न स्तरो ं का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

- प्रेरणा, मूल्य तथा व्यक्तित्व आवश्यकतओ के उच्च एवं निम्न स्तरो ं पर निम्नलिखित वर्गों के आधार पर शून्य उपपरिकल्पनाओ ंका निर्माण कर उनका परीक्षण भी शोधार्थिनी द्वारा किया जायेगा
- (क) बालक वर्ग
- (ख) बालिका वर्ग • (ग)

विज्ञान वर्ग

- (घ) मानविकी वर्ग • 10.

शोध के चर

- **स्वतंत्र चरः** उपलब्धि अभिप्रेरणा, मूल्य तथा व्यक्तित्व आवश्यकताएँ। **आश्रित चरः** शैक्षिक उपलब्धि

शोध प्रारूप एवं शोध प्रविधि

- प्रस्तुत शोध विभिन्न माध्यमिक विद्यालयो में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विभिन्न कारकों के प्रभाव के अध्ययन से सम्बन्धित है अतः शोध कार्य की प्रकृति वर्णनात्मक अनुसंधान की होगी। जिसे सर्वेक्षण प्रविधि के आधार पर सम्पन्न किया जायेगा।

शोध जनसंख्या एवं न्यायदर्श

- प्रस्तुत शोध बदलते शैक्षिक परिदृश्य यथा– आनलाईन शिक्षा प्रणाली, नई शिक्षा नीति का अनुपालन, तथा परीक्षा पद्धति एवं विद्यार्थियों की उपलब्धियों के आकलन एवं निर्धारण की नवीन प्रणालियों के परिप्रेक्ष्य में एक आवश्यक एव महत्पूर्ण स्थान रखता है। अतः इसकी महत्वता को ध्यान में रखते हुए शोधार्थिनी ने मेरठ मण्डल के तीन जनपदों यथा– मेरठ, हापुड़ एवं गाजियाबाद मे किसी भी वैधानिक (राज्य अथवा केन्द्र सरकार स्तर पर) शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता एव

- सम्बद्धता प्राप्त स ंचालित समस्त माध्यमिक विद्यालयों को शोध की जनसंख्या माना गया है। शोध न्यादर्श हेतु चयनित प्रत्येक जनपद से 5–5 विद्यालयों कुल 15 विद्यालयो ं का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया जायेगा। प्रत्येक विद्यालय से कक्षा 9, 10 11 एव ं 12 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों से कुल 32 विद्यार्थियों का चयन (2×2×2×2) कारक प्ररचना के आधार पर यादृच्छिक विधि से किया जायेगा। इस प्रकार कुल 480 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप मे ंकिया जायेगा। जिसका प्रारूप निम्न प्रकार से होगा

कक्षा–9		कक्षा–10		कक्षा–11		कक्षा–12		कुल योग
मानविक ी वर्ग	विज्ञान वर्ग	मानविकी वर्ग	विज्ञान वर्ग	मानविक ी वर्ग	विज्ञान वर्ग	मानविक ी वर्ग	विज्ञा न वर्ग	
बालिका विद्यार्थी	30	30	30	30	30	30	30	240
बालक	30	30	30	30	30	30	30	240
योग	60	60	60	60	60	60	60	480

शोध उपकरण

- शोध के प्रमाणिक एव ंविश्वसनीय व वैध परिणामों की प्राप्ति हेतु तीन मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग शोधार्थिनी द्वारा किया जायेगा जबकि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु शोधार्थिनी एवं शोध पर्यवेक्षक द्वारा निर्मित शोध परीक्षण उपकरण का प्रयोग किया जायेगा। तीनो मानकीकृत परीक्षणों का विवरण इस प्रकार है–
- 1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के मापन हेतु डा० टी० आर० शर्मा द्वारा निर्मित एकेडमिक अचीवमेंट मोटिवेशन टेस्ट अथवा डा0 बीना शाह (1986) द्वारा निर्मित उपलब्धि अभिप्रेरणा मापनी का प्रयोग किया जायेगा ।
- 2. मूल्य मापन हेतु जी. पी. शेरी एवं आर. पी. वर्मा द्वारा निर्मित मूल्य परीक्षण

- 3. व्यक्तित्व आवश्यकताओं के मापन हेतु डा0 मीनाक्षी भटनागर द्वारा निर्मित व्यक्तित्व परीक्षण संकेतिका
- **शोध सांख्यिकी प्रविधियाँ**
- प्रस्तुत शोध मे ं मनोवैज्ञानिक चरो ंतथा मानकीकृत परीक्षणो पर प्राप्त आंकड़ो से विश्लेषण के आधार पर प्रमाणिक निष्कर्ष प्राप्त करने हेतु शोधार्थिनी द्वारा उपयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियो यथा– समान्तर माध्य, प्रमाणिक विचलन, टी–परीक्षण, अथवा एफ.–परीक्षण अथवा आवश्यकतानुरूप अन्य उचित सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा ।

सन्दर्भ सूची

- 1. अकरम माध्यमिक विद्यालय स्तर पर शिक्षक प्रभावशीलता और छात्र उपलब्धि के छात्रों के बीच संबंध बुलेटिन आफ एजुकेशन एंड रिसर्च अगस्त 2019, वाल्यूम 41, न .–2, 93–108।
- 2. आहलुवालिया आई उपलब्धि अभिप्रेरणा पर लिंग, आयु, जन्मक्रम, आर्थिक स्तर, पालकों की शिक्षा आदि तत्वों के प्रभाव का अध्ययन, फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, 1985; 1–48.
- 3. कादर, मोहमद अकबल (2017). अचीवमट मोटवेशन ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेंटस इन रिलेशन टू देयर जेंडर एंड मीडयम ऑफ इंस्ट्रक्शनः एन एम्पिरिकल स्ट्डी ऑफ हैदराबाद डिस्ट्रिक्ट. इंटरनेशनल जर्नल अ फ अकादिमक रिसर्च एंड डेवलपमेण्ट. सितबर, 2(5), 813–816

- 4. कौल लोकेश, शिक्षा अन ुसंधान की कार्यप्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली, 2010।
- 5. गैरेट हेनर ई. एण्ड बुडवर्थ, आर. एस. (1971). स्टेटिस्टिक इन साइकोलोजी एण्ड एजुकेशनबोम्बेः वकील्स, फेफर एड साइमन प्राइवेट लिमिटेड
- 6. जोशी और परिजा पी0, 'पर्सनालिटी कोरिलेट्स ऑफ टीचिंग कम्पटीटेन्सी,'' भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका अंक–2, जनवरी–जून 2000 पृ057–62 वाल्यूम–19
- 7. दुबे, प्रमिला एवं गर्ग, निकिता, अध्यापक के व्यक्तित्व का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्र ेरणा एवं विषय रुचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, सांस्कृतिक और सामाजिक अनुसंधान, 2020ए1;1द्धए14.16ण
- 8. देसवाल, वाई. एवं रानी, आर., अभिभावक युक्त किशोरों एवं अनाथ किशोरों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर अध्ययन, जर्नल एजुकेशन एण्ड साइकोलॉजीकल रिसर्च, 2012; 2(1), 69–73.
- 9. पाण्डेय, रामशकल, 'शिक्षा की ऐतिहासिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2005।
- 10. बब्बर, एस., उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों क े नियंत्रण अवस्थान का उनकी उपलब्धि अभिप्र ेरण पर प्रभाव का अध्ययन, शोध संप्र ेषण, ज ुलाई–सितम्बर 2014, अंक 9, 133–139.
- 11. भटनागर सुर ेश, 'कोठारी कमीशन, एक विवेचनात्मक अध्ययन', लॉयल बुक डिपो, मेरठ, 1996